67

ISSN-2278-3911

SHODH-PRAKALP

A Quarterly Research Journal

शोध-प्रकल्प

त्रैमासिक रिसर्च जर्नल

PEER-REVIEWED JOURNAL

www.shodhprakalpresearch.com

Vol. LXVII Yr. 21
April-june 2014

Editor
Dr.Sudhir Sharma
Email- shodhprakalp@gmail.com

आर. एन. आई. पंजीयन क्रमांक : MPHIN/1997/2224

अट्ठारह वर्षों से लगातार प्रकाशित

SHODH-PRAKALP
A Peer Reviewed Quarterly Research Journal ISSN 2278-3911

अंक : 67 वर्ष : 21 संख्या : 2 अप्रैल-जून, 2014

INDEX

1.	A Study of Positive Mental Health among Male Adolescent Students of Central School: With Special Reference to Participation in Sports	Dr. Pankaj Shukla	6
2.	Challenges in implementation of Cash Transfer Scheme	Dr. Smt. Namita Guha Roy	8
3.	Dividends and Reserves	Kushal Aditya Gulkari	11
4.	Modulatory Role of Pineal & Melatonin on Air-Breathing Activity Rhythm in Clarias Batrachus (LINN.)	Swati Sahu	15
5	National Rural Employment Guarantee	Kushal aditya gulkari	20
6	हिन्दी कथा साहित्य का विकास और पत्रकारिता	डॉ. अभिलाषा भॉगरे	25
7.	हरेकृष्ण मेहेर के संस्कृत काव्यों का साहित्यिक अध्ययन	डॉ. वेद प्रकाश मिश्र, सुप्रिया नाथ	29
8.	ममता कालिया और समकालीन महिला कथाकार	डॉ. राकेश कुमार तिवारी, अंशु राणा	23
9.	भारत में पूंजी निर्माण एवं बचत व्यवहार : आर्थिक विश्लेषण (2000–01 से 2012–13)	प्रो. डॉ. अमरकान्त पाण्डेय , मनीषा पाण्डेय	36
10.	छत्तीसगढ़ सरकार का सार्वजनिक ऋण : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	मीना गुप्ता	43
11.	छत्तीसगढ़ में लाख उत्पादन	डॉ. चन्द्रशेखर चौबे, श्रीमती कविता शर्मा	51
12.	भारतीय परम्परा से ध्वनि की उत्पत्ति प्रक्रिया	डॉ. वेद प्रकाश मिश्र, सुभाष चन्द्र	54
13	''उत्तररामचरितम् में चतुर्विध अभिनय का स्वरूप''	डॉ. वेद प्रकाश मिश्र, श्रीमती श्रुति शुक्ला	58
14.	''न्यायिक सक्रियता एवं कामकाजी महिलाएं''	प्रो. अ. अलीम खान, सुशीला यादव	61
15.	लोक नायक जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रान्ति के आहवान के लिए उत्तरदायी परिस्थितियाँ एक ऐतिहासिक अध्ययन	डॉ. दलजीत सिंह	63
16.	20 वी शताब्दी के उत्तर्राध्द में औद्योगिकरण की स्थिति एवं बदलता हुआ स्वरुप	डॉ. के. एल. टाण्डेकर	73
17.	रामकथा की परम्परा और बुंदेली लोक साहित्य	डॉ. रजनी पांडे	75
18.	अध्यात्म रामायण में कुबेर का तप	डॉ. वेदप्रकाश मिश्र,श्रीमती उमा सिंह चंदेल	80
19.	स्त्री अस्मिता का स्वर और आशापूर्णा देवी के उपन्यास	डॉ. सुनीता मिश्रा	83
20.	संत कबीर की सामाजिक प्रतिबद्धता	डॉ. नीलिमा वर्मा	86
21.	लोक परंपराओं में स्त्रियों की दशा : छत्तीसगढ़ के संदर्भ में	डॉ. के. के. अग्रवाल, श्रीमती सरिता साहू	92
22	समकालीन साहित्य में स्त्री 'स्व'	अनीश कुमार	95
23	गीता यदि प्रबंधन की पाठशाला है तो रंगभूमि और गोदान–प्रयोगशाला	रधुवर दयाल सिंह	97
24	भारतीय मुद्रा के उत्पत्ति का काल	गौरी शंकर चन्द	102
25	रवि श्रीवास्तव का रचना संसार	श्रीमती कल्पना डाहाके	104
26	संत गुरूघासीदास का सामाजिक आंदोलन	डॉ. राम विजय शर्मा	108
27	अनाथ एवं सामान्य बच्चों की सामाजिक सक्षमता पर एक तुलनात्मक अध्ययन	सिंह सुमिता, चोपडे विधा,	111
28	पंचायतीराज व्यवस्था में अनुसूचितजाति जनप्रतिनिधियों की भूमिका	रजनीकांत बंजारे	114
29	लोकगीतों में भारतीय पराधीनता की कहानी	डॉ. शैलेन्द्र कुमार ठाकुर	117
30	अज्ञेय की काव्य – रचना विषयक धारणाएँ : एक अनुशीलन	डॉ. नामदेव जासूद	121
31	एन.टी.पी.सी. सीपत संयंत्र से निकलने वाले ध्वनि प्रदूषण का विशिष्ट अध्ययन	सत्यवती कौशिक	125
32	प्रभाष जोशी पर गांधी दर्शन का प्रभाव	डॉ. राजेश दुबे, दीपक कुमार पाचपोर	128

www.shodhprakalp.com

टीप : शोध-प्रकल्प में प्रकाशित शोधपत्रों और आलेखों में व्यक्त विचार या तथ्यों से संपादक/संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है उनके लिए लेखक ही उत्तरदायी हैं । शोधपत्रों में पुनरावृत्ति अथवा मौलिकता के संबंध में लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं ।

SN 2278-3911

2014

33	नक्सलवाद और मनोवैज्ञानिक युद्धकर्म एक विश्लेष्णात्मक अध्ययन	डॉ. वर्णिका शर्मा, डॉ. गिरीशकांत पाण्डेय	131
34	धान के संदर्भ में जैव विविधता में परिवर्तन (2003–13) रायगढ़ जिले के सारंगढ़ तहसील का प्रतीक अध्ययन	डा. राजकुमार पटेल	136
35	भारत छोड़ो आन्दोलन में गोरखपुर की भूमिका	नवीन कुमार	139
36	पिछडी बस्तियों के पालक एवं पाल्यों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का मापन	श्रीमती अंजु त्रिपाठी	143
37	हिन्दी काव्य–संसार को आचार्य विद्यासागर का योगदान	डॉ.चन्द्रकुमार जैन	146
38	सूचना आवश्यकता एवं सूचना खोज व्यवहार	मेघा ठाकुर	149
39	सामाजिक संबंधों को प्रभावित करती पूँजीवादी व्यवस्था	उपेंद्र कुमार शर्मा, डॉ. (श्रीमती) सुचित्रा शर्मा	154
40	छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले का सामाजिक–सांस्कृतिक इतिहास	कु. यशोदा साहू	157
41	छत्तीसगढ़ में पंचायती राज व्यवस्था में महिला सशक्तीकरण	डॉ. एस.एल. निराला, विनोद कुमार साहू	160

6
y 8
11
15
20
25
थ 29
गा 23

ीषा पाण्डेय 36
43
वेता शर्मा 51
द्र 54
ति शुक्ला 58
ादव 61
63
73
75
सिंह चंदेल 80
83
86
रेता साहू 92
95
97
102
104
108
111
114
117
121
125
वपोर 128

वार्य नहीं है उनके

www.shodh-prakalpresearch.com

शोध-प्रकल्प
त्रैमासिक रिसर्च जर्नल

ISSN 2278-3911

सामाजिक संबंधों को प्रभावित करती पूँजीवादी व्यवस्था

उपेंद्र कुमार शर्मा,
शोधार्थी
शा. महाविद्यालय, अर्जुन्दा (दुर्ग)

डॉ. (श्रीमती) सुचित्रा शर्मा
सहायक प्राध्याक, समाजशास्त्र,
शा. महाविद्यालय, अर्जुन्दा (दुर्ग)

वैश्विक अर्थव्यवस्था में दो प्रमुख विचारधाराएँ है–1. पूँजीवाद एवं साम्यवाद। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में जहाँनिजी पूँजी को महत्व प्रदान किया जाता है वहीं साम्यवादी अर्थव्यवस्था में पूँजी पर नियंत्रण राज्य का होता है। स्वतंत्रता के पश्चात भारत में इन दोनों विचारधाराओं से अलग साम्यवादी व्यवस्था को अपनाया गया। इस व्यवस्था में निजी पूँजी के महत्व को स्वीकार करते हुए समाज कल्याण पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरी। इस व्यवस्था से देश में आर्थिक सुधारों के कारण आर्थिक विकास की गति तो तीव्र हुई लेकिन साथ ही अनेक प्रकार की सामाजिक समस्याओं का भी जन्म हुआ।

इसमें कोई संदेह नहीं हे कि पूँजीवादी समाज ने विकास के अनेक आयाम स्थापित किये हैं। मनुष्य को हर प्रकार की सुख–सुविधाएँ उपलब्ध करवाई है, लेकिन क्या इन सब से मानवता को खुशी मिल गई है? क्या इस विकास ने मानवता को सुरक्षित बनाया हैं? आज इतने विकास इतनी सुख–सुविधाओं के बाद भी मनुष्य–मनुष्य के बीच की दूरी बढ़ती जा रही है। व्यक्तिवादिता के कारण सामाजिक संबंधों का तानाबाना बुरी तरह प्रभावित हुआ है। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की प्रवृत्ति बड़े पैमाने पर उत्पादन एवं एकाधिकार की होती है। इसमें सम्पत्ति उत्तरोत्तर कम–से–कम व्यक्तियों के हाथों में इकट्ठी होती जाती है जिससे अमीर और अमीर होते जाता है वहीं गरीब और गरीब होते जाता है।

राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के ऑकड़ों के अनुसार भारत के 1967–68 में जनसंख्या का 50.6 प्रतिशत भाग गरीब था जो वर्तमान में लगभग 30 प्रतिशत है। प्रतिशत में यह भले ही कम हो रहा है लेकिन संख्या के लिहाज से यह ऑकड़ा बढ़ता ही जा रहा है। वृहद उद्योगों ने लघु एवं कुटीर उद्योगों को नष्ट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जिससे कृषि पर जनसंख्या का दबाव बढ़ा है और ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

प्रस्तुत शोध प्रपत्र द्वितीयक आँकड़ों के संकलन एवं विश्लेषण पर आधारित है जिसका उद्देश्य यह जानना है कि किस प्रकार पूँजीवाद सामाजिक समस्याओं को जन्म देता है।

प्रस्तावना –

वैश्विक अर्थव्यवस्था में दो प्रमुख विचारधाराएँ है–1. पूँजीवाद एवं साम्यवाद। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में जहाँनिजी पूँजी को महत्व प्रदान किया जाता है वहीं साम्यवादी अर्थव्यवस्था में पूँजी पर नियंत्रण राज्य का होता है। स्वतंत्रता के पश्चात भारत में इन दोनों विचारधाराओं से अलग साम्यवादी व्यवस्था को अपनाया गया। इस व्यवस्था में निजी पूँजी के महत्व को स्वीकार करते हुए समाज कल्याण पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरी। इस व्यवस्था से देश में आर्थिक सुधारों के कारण आर्थिक विकास की गति तो तीव्र हुई लेकिन साथ ही अनेक प्रकार की सामाजिक समस्याओं का भी जन्म हुआ। इन सामाजिक समस्याओं में वैयक्तिक विघटन, पारिवारिक विघटन, बेरोजगारी में वृद्धि अमरी व गरीबी के बीच बढ़ता अंतर तीव्र, औद्योगिकरण एवं नगरीकरण के कारण बाल–अपराध, आवास की समस्या, यौन अपराध, स्वास्थ्यगत संस्थाएँ आदि प्रमुख है।

अध्ययन का उद्देश्य–

इस अध्ययन का उद्देश्य यह जानना है कि किस प्रकार पूँजीवादी सामाजिक समस्याओं को जन्म देता है।

तथ्य संकलन एवं विश्लेषण –

प्रस्तुत शोध प्रपत्र द्वितीयक आँकड़ों के संकलन एवं विश्लेषण पर आधारित है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि पूँजीवादी समाज ने विकास के अनेक आयाम स्थापित किये है। मनुष्य को हर प्रकार की सुख–सुविधाएँ उपलब्ध करवाई है, लेकिन क्या इन सब में मानवता को खुशी मिल पायी है? क्या इस विकास ने मानवता को सुरक्षित बनाया है? आज इतने विकास, इतनी सुख–सुविधाओं के बाद भी मनुष्य–मनुष्य के बीच की दूरी बढ़ गई है। अमीरों एवं गरीबों के बीच की खाई बढ़ती जा रही है। व्यक्तिवादिता के कारण सामाजिक संबंधों का तानाबना बुरी तरह प्रभावित हुआ है। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की प्रवृत्ति बड़े पैमाने पर उत्पादन एवं एकाधिकार की होती है। इसमें सम्पत्ति

Received : 18 April | Reviewed : 26 Apirl | Accepted : 12 May